कोरोना काल में समाज और साहित्य

डॉ. वत्सला श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुऐट कॉलेज, झालावाड़

कोरोना काल में समाज और साहित्य विषय पर लेखन के उपक्रम और उपसंहार से पूर्व कोरोना (कोविड-19) के चतुर्दिक प्रसृत होने पर जो परिदृश्य उपस्थित हुआ, सर्वप्रथम उस पर चर्चा करेंगे।

विरञ्चि-विरचित सृष्टि के विस्तृत वितान पर कोरोना-19 महामारी के अभिव्याप्त होते ही सम्पूर्ण विश्व के साथ समग्र भारतवर्ष के लोग भी विपत्ति के विप्लव में निमग्न हो गये। सम्पूर्ण विश्व में 'लॉक डाउन' की घोषणा कर दी गयी। मानवजीवन की गतिविधियाँ अवरुद्ध हो गयीं। समस्त जन समुदाय दहशत से भर उठा। सोशल मीडिया द्वारा चौबीसों घंटे देश-देशान्तर की खबरों को प्रसारित करने से, उन देशों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति व प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होने वाली मृत्युदर और मृत्यु की त्रासदी को देख कर समस्त देश व समुदाय भय की विभीषिका से भर उठा। कतिपय मासों के अनन्तर इस महामारी का प्रकोप भारतवर्ष में दबे पाँव दस्तक देने लगा और महीने भर के अंदर विकराल रूप में फैल गया। W.H.O. और विशेषज्ञों के विश्लेषण के उपरांत यह ज्ञात हुआ, कि यह वैश्विक महामारी चाइना के वुहान शहर से समस्त विश्व में फैली है। इस महामारी की कोई दवा नहीं है।

विश्व के नाना देशों अमेरिका आदि से नाना प्रकार की सूचनायें प्रसारित की गयीं तथा राजनीतिज्ञों द्वारा राजनीति की अटकलें भी लगायी गयीं। चिकित्सकों द्वारा जीवन को सुरक्षित रखने के लिए विविध प्रकार के उपाय यथा- मास्क का प्रयोग, दो गज की दूरी, हाथ को बार-बार साबुन से धोना, भीड़-भाड़ से बचना, हाथ न मिलाना आदि बताए गए। आयुर्वेद के द्वारा योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, काजू का सेवन, आरोग्य सेतु एप डाउन लोड करना, शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के मसालों, आँवला, नीबू, खट्टे पदार्थों का सेवन आदि रक्षाकवच मानवजीवन की रक्षा हेतु सुझाये गये।

समाज का हर वर्ग सन्त्रासग्रस्त हो गया। प्राइवेट सेक्टर (व्यक्तिगत संस्थाओं) द्वारा वेतन भुगतान न करना तथा मल्टीनेशनल-कम्पनियों द्वारा वेतन की कटौती तथा सेवारत कार्मिकों की छँटनी कर देने से अनेक प्रकार की आर्थिक

समस्याओं का जन्म हुआ। उद्योग-धन्धों में काम करने वाले श्रमिकों को मालिकों द्वारा वेतन का भुगतान न करने से श्रमिकों ने कार्य को छोड़ अपने गृह निवास को प्रस्थान किया। यातायात के साधन न होने से इन मजदूरों को भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पूरे देश से श्रमिकों का पलायन हुआ, जिसका असर उद्योग-धन्धों पर कम तथा छोटे व्यवसायों को बहुत नुकसान हुआ। आवागमन के अवरुद्ध होने से माल (सामान) की आपूर्ति बाधित हो गयी। 'लॉक डाउन' होने से कोचिंग के विद्यार्थियों का गृहगमन अवरुद्ध हो गया, जिसे बाद में प्रदेश की सरकारों ने पहल कर इस समस्या से विद्यार्थियों को निजात दिलायी। इस तरह अनेकानेक समस्यायें मुँह बायें खड़ी हो गयीं।

लॉकडाउन होने से जो जहाँ पर गया हुआ था, उसे वहीं रहना पड़ा। ऐसी स्थिति में कई लोग घोर संकट में फंसे और कई लोग लाभान्वित भी हुए। जो दम्पति अलग-अलग सेवाओं में विभिन्न प्रदेशों में थे, उन्हें कोरोना काल में एक साथ रहने का अवसर मिल गया और उन्होंने जीवन के अच्छे पल व्यतीत किए। कई लोग जो इस समय किसी काम, सेवा, उपचार, विवाह या अन्य समारोह के लिए बाहर गये थे, वे वहीं फँसे रह गये। उनके लिए यह समय कष्टप्रद रहा।

इस समय में एक और परिवर्तन देखने को मिला। घर में जो बुजुर्ग प्राणी दादा-दादी थे, जिनसे बेटे-बहू, पोती-पोते को बात करने की फुरसत नहीं थी, वे घर के बुजुर्गों से संवाद करने लगे। बच्चे उनका ध्यान रखने लगे। घरेलू खेल जो बन्द हो गये थे, वे पुनः खेले जाने लगे। जो लोग गीत-संगीत के शौकीन थे, उन लोगों ने फेस बुक, स्टारमेकर पर गाने की प्रस्तुतियाँ दी। जीवन घर में सिमट गया। बाजार में खाद्य पदार्थ की बिक्री बन्द हुई, तो घरों में नयी-नयी वस्तुएं बनने लगी। जो चीजें बाजार में जा कर खाते थे, उन्हें घर में बना कर खाने लगे।

कुछ परिवारों में लोगों ने पुरानी हस्तकलाओं को बच्चों को सिखाना शुरु किया, जिसे सीखने का बच्चों के पास समय नहीं होता था। प्रकृति और पर्यावरण सब में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। नदियों का जल स्वच्छ हो गया। वाहनों के आवागमन न होने से वन्य जीव जन्तु निर्भय होकर सड़कों पर विचरण करने लगे। समुद्रतट राजहंसों के समूह से अभिव्याप्त हो गया। उद्योग-धन्धों से होने वाले प्रदूषण के बन्द होने से कई शहरों से हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ दिखायी देने लगीं। इस महामारी से मानव-जीवन, प्रकृति और पर्यावरण सबमें परिवर्तन दिखायी देने लगा। लोगों को फुरसत ही फुरसत मिल गयी। न नौकरी पर जाना, न घर से बाहर निकलना। जिन्दगी घर में कैदी की भाँति कैद हो गयी। सभी प्राणियों (व्यक्तियों) ने अपने ढंग से अपना समय व्यतीत किया। लेकिन सभी प्राणी कोरोना के कारण मृत्यु के भय से अत्यधिक भयभीत हो गये। किन्तु जीवन व मृत्यु दो अटल सत्य हैं। मनुष्य को यम के पाशों से घबराना नहीं चाहिए। महान शायर जौक ने लिखा है :-

लायी हयात़ आये कज़ा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले।।

इस शाश्वत सत्य को जिसने जीवन में ग्रहण कर लिया, उसे फिर मृत्यु का भय रह ही नहीं जाता और जिन्दगी को जीने का अन्दाज बदल जाता है। इस सत्य को ग्रहण कर धरती पर बहुत से मानव प्राणी जिन्दादिली से जीवन जीते हैं और विषम परिस्थिति में भी जीवन में आनन्द को ढूँढ लेते हैं। कोरोना काल में 'लॉक डाउन' हो जाने से समय को सकारात्मक रूप से व्यतीत करना कठिन था, लेकिन साहित्यकार बन्धुओं ने इस कालावधि में भी अपनी लेखनी के द्वारा निरन्तर सक्रिय रह कर सकारात्मक वातावरण के निर्माण में योगदान दिया ।

लोक की अनुकृति साहित्य है। लोक व समाज में जो घटित होता है, उसका प्रतिबिंब साहित्य में प्रतिफलित (छ्लकता) होता है। साहित्यकार समाज व लोक में अभिव्याप्त परिस्थितियों का दिग्दर्शन करता है। ये परिस्थितियाँ उसके अंतर्मन को आन्दोलित व उद्वेलित करती है। जब कवि का हृदय परिस्थतियों व समस्याओं से आक्रान्त हो जाता है तब वह अपनी रचनाधर्मिता से समाज व राष्ट्र को सचेत व संदेश देने का प्रयास करता है। कोरोना के समय में साहित्यिक सकारात्मकता ने मानव प्राणियों को मजबूत सम्बल प्रदान किया । सकारात्मक वातावरण बनाए रखने में सोशल मीडिया की अहं भूमिका रही। पहले तो सोशल मीडिया (सामाजिक जनसंचार) के माध्यम में केवल टी.वी., रेडियो व समाचार पत्र थे, लेकिन अब सोशल मीडिया के तन्त्रों (सामाजिक प्रचार-प्रसार के संसाधनों) में भी वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप आज फेसबुक, यू ट्यूब, वाट्स एप, मैसेंजर, इंस्टाग्राम, ट्यूटर, ब्लॉग आदि अनेक पटल (साधन, माध्यम) विकसित और सर्वसुलभ हो गए हैं। इनका प्रयोग करके साहित्यकारों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा प्रबुद्ध गणमान्य नागरिकों ने इस विकट समस्या से जूझने व निकलने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया है। इस विषम समयावधि में साहित्य ने ही लोगों के निराश मन में आशा की किरण जगायी। कलमकारों ने अपनी कलम से यथा- कविता, गीत, प्रतिगीत, गजल, हाइकु आदि विधाओं में लिख कर विभिन्न माध्यमों के विभिन्न समूहों में डाल कर लोगों को जागरूक करने के साथ लोगों में आत्मबल व ऊर्जा का संचार किया ।

इस महामारी काल में रचनाकारों ने रचनाएँ तो लिखीं, इसके साथ ही ऑन लाइन पटल को भी सृजित किया। भारतवर्ष के हर प्रान्त यथा - उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कोलकाता, गुजरात, बिहार में अनेकानेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंच ऑन लाइन सक्रिय हुए, जिनके यू ट्यूब, फेसबुक पेज, वाट्सएप ग्रुप तथा इन्स्टाग्राम पर निरन्तर साहित्यिक गतिविधियाँ प्रवाहमान हैं। कुछ ऑन लाइन (पटल) मंच के नाम उल्लेखनीय है :- राष्ट्रिय लेखक मंच, विश्व रचनाकार मंच, राष्ट्रीय कवि संगम, महिला काव्य मंच राजस्थान, राष्ट्रीय कवयित्री मंच,

महात्मा गांधी साहित्य, त्रिवेणी (डिजिटल कवि सम्मेलन) कोलकाता, भीलवाड़ा जिले के कवि व कविता प्रेमी फेसबुक पेज, काव्यालय साहित्यिक मंच शाहजहाँपुर, गांधी नगर हिन्दी कवि सम्मेलन ऐसे असंख्य मंच हर प्रदेश के हर जिले में निर्मित हुए हैं, जो निरन्तर साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं। कोरोना काल में मंचों से जो कवि सम्मेलन होते थे, उनकी गति कोरोना काल में अवरुद्ध हो गयी । इसके साथ ही यह भी सत्य है कि इन मंचों पर केवल प्रतिष्ठित कवियों को ही स्थान मिल पाता है। अन्य कवियों को अवसर उपलब्ध नहीं हो पाता । किन्तु सोशल मीडिया पर ऑन लाइन कवि सम्मेलन व साहित्यिक गतिविधियों के संचालित होने से छोटे, नवोदित तथा स्वान्तः सुखाय रचना करने वाले कवियों को भी स्थान मिला है।

फेसबुक, जूम एप तथा गूगल मीट आदि एप पर निरन्तर विभिन्न साहित्यिक समूहों द्वारा आडियो, वीडियो, पठन व लेखन द्वारा निरन्तर काव्य पाठ व गीत का प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। जिसमें नवोदित व प्रतिष्ठित कवियों द्वारा सहभागिता की जा रही है। यदा-कदा लब्ध प्रतिष्ठ, ख्यातिनाम कवियों के काव्य पाठ का आयोजन किया जा रहा है। सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से नवमार्ग को दिखाने का कार्य किया है, जिससे समाज व राष्ट्र का हित हो। इस काल में साहित्य से सबको सीखने का अवसर भी मिला । देश के कई विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में वेबिनारों का आयोजन होने से शिक्षा के क्षेत्र में (शिक्षा जगत् में) जो शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी, वह दूर हुई। इन वेबिनारों ने बुद्धिजीवियों को अध्ययन के प्रति अत्यधिक प्रतिबद्ध किया । नये-नये विषयों पर परिसंवाद व चर्चाएं हुई। पर्यावरण दिवस व योगदिवस पर अनेक बेविनार आयोजित किए गए।

इसके साथ ही विभिन्न विषयों पर वेबिनारों का आयोजन किया गया, जिनमें शिक्षाविदों, शोधछात्रों, विश्वविद्यालय व महाविद्यालयों के प्रोफेसरों ने सहभागिता की और ई प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। कुछ वेबिनारों के विषय इस प्रकार रहे - वर्तमान वैश्विक संकट की घड़ी में योग की महत्ता, कोविड-19 के संदर्भ में वैदिक वाङ्मय की प्रासंगिकता, सिनेमा और रंगमंच, महामारी के बाद अध्ययन की प्रवृत्तियाँ और प्रतिक्रिया, विश्वव्यापी महामारी विस्थापन और रोजगार की चुनौतियाँ, बहुस्तरीय सम्भावनायें और योजना के अनुसरण से सम्बद्ध, कोविड-19 के काल में युवा मस्तिष्क को सम्बोधित करने वाली योजनाओं को मूर्त रूप देना, कोविड-19 का भारतीय संगीत पर प्रभाव, मानसिक तनाव और संगीत कोविड-19 के समय कला और कलाकारों की स्थिति का संकट कोविड-19 के वर्तमान संदर्भ में, कोविड-19 के समय भारतीय स्वालंबन (आत्मनिर्भरता) की चुनौतियाँ व अवसर, नई शिक्षा नीति 2020 अवसर तथा चुनौतियाँ, नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय भाषाओं कला एवं संस्कृति का संवर्धन आदि।

यद्यपि इस कोरोना काल में हम सामाजिक सम्बंधों, सामाजिक समरसता एवं अपने परिवेश से अलग-थलग हो गए हैं, फिर भी अपने घरों में रह कर परस्पर एक दूसरे से रचनात्मक संवाद, प्रतिक्रिया व टिप्पणी आनलाइन सोशल मीडिया के माध्यम से कर पा रहे हैं। दूर-पास सभी से जुड़ने के लिए हमारे पास सशक्त माध्यम हैः- इंटरनेट (अंतर्जाल)। इस काल में बहुत से ई-पाठक व ई-श्रोताओं से लोग जुड़े हैं। इस समय में सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी एवं व्यवहारिक परिवर्तन भी हुए हैं। इस महामारी के काल को तकनीकी सुविधाओं ने वैश्विक गाँव बना दिया है तथा रचनाकारों को सार्थक मंच दिया है।

पठन-पाठन के प्रति भी लोगों की रुचि जागृत हुई है। नवांकुर रचनाकारों को नवसृजन का एक प्लेटफॉर्म मिला है। कार्यक्रमों में लाइव प्रस्तुति का एक नया चलन चल पड़ा है। कोरोना पर कवियों ने अपनी खूब लेखनी चलायी है। सोशल मीडिया पर कोरोना तथा मजदूर वर्ग को लेकर कविताएँ निरन्तर लिखी जा रही हैं, जो मजदूरों की परेशानियों, कठिनाइयों व लाचारियों को बयाँ कर रही हैं। प्रत्येक भाषा यथा- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं में विभिन्न संस्थाओं द्वारा कोरोना पर काव्यसंग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। संस्कृत में 'अर्वाचीन संस्कृतम्' पत्रिका (जिसके सम्पादक पद्म श्री, राष्ट्रपति सम्मानित डॉ. रमाकान्त शुक्ल हैं) का पूरा अंक ही कोरोना पर लिखित छंदों में प्रकाशित हुआ है और पत्रिका का आँन लाइन विमोचन भी हुआ। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में भी कोरोना पर काव्य लिखे गये और प्रकाशित भी हुए।

सोशल मीडिया पर देश की नामचीन हस्तियाँ कुमार विश्वास, ऋचा अनिरुद्ध, निलेश मिश्रा, मालिनी अवस्थी काफी सक्रिय रहे। पद्म श्री से विभूषित लोकगायिका मालिनी अवस्थी ने लोक से सम्बद्ध प्रत्येक पहलू पर व्यापक चर्चाएं प्रस्तुत की। इसके साथ ही हिन्दी, संस्कृत तथा अन्य विषयों से सम्बद्ध अनेक विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर फेसबुक, यू ट्यूब के माध्यम से अपने मन्तव्यों को प्रस्तुत किया। कुछ कलमकारों ने कोरोना पर तत्काल प्रतिक्रिया स्वरूप अपनी रचनायें प्रस्तुत कीं। कुछ ने कुछ समय पश्चात् प्रतिक्रिया की और बहुत से साहित्यकार बहुत वर्षों बाद भी कोरोना पर रचनायें लिखते रहेंगे। कोरोना काल के इस विपत्तिकाल में हिन्दी साहित्य में विपुल मात्रा में नव साहित्य का सृजन हुआ। कवियों ने निर्बाध रूप से रचनायें की हैं। अध्ययन तथा किताबों के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है। संप्रेषणीयता का विस्तार हुआ है, जिससे सकारात्मकता का भी विस्तार हुआ है। ऑन लाइन परस्पर संवाद के माध्यम से सभी रचनाकार अपनी रचनाधर्मिता को बढ़ा रहे हैं।

इस प्रकार कोरोना का कालखण्ड साहित्य व समाज उभय पक्षों के लिए नकारात्मकता से ज्यादा सकारात्मकता से युक्त रहा है। समाज के लोग इस समय को सुरक्षा व सावधानी के साथ आनंदपूर्वक व्यतीत कर रहे हैं।